नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय
जबलपुर

पंचम दीक्षांत समारोह

21 फरवरी, 2019

माननीय राज्यपाल के उद्‌बोधन का प्रारूप

अध्यक्षीय दीक्षांत उद्‌बोधन

श्रीमती आनंदी बेन

महामहिम राज्यपाल, मध्यप्रदेश

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के विगत वर्षों के अनुरूप आयोजित पंचम दीक्षांत समारोह में आप के बीच आकर मुझे अपार हर्ष हो रहा है । दीक्षांत समारोह, गुरूकुल की परम्परा रही है, जिसे प्राचीन काल में ऋषि–मुनियों द्वारा प्रारंभ किया गया था। यह परम्परा, गुरूओं और शिष्यों की कार्यदक्षता और कुशलता की समीक्षा के आधार पर उन्हे विशिष्ट कार्य सौंपे जाने की प्रक्रिया होती थी, जिसमें प्रशिक्षु वन्य जीवों तथा पालतू पशुओं का प्रबंधन भी सीखा करते थे । हमारे धर्मग्रंथों में वर्णित देवी–देवताओं के द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले वाहनरूपी पशु–पक्षी, सनातन काल से ही हमारे वैज्ञानिक विकास के प्रतीक रहे हैं जो संकेत करते है कि इनके संरक्षण और संवर्धन के बिना हमारे समाज का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है ।

यह विश्वविद्यालय दिनांक 21 अगस्त 2012 को राजपत्र में प्रकाशन के पश्चात् नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाने लगा । इसका नामकरण पद्यविभूषण श्री चंडिकादास अमृतराव देशमुख एक ख्यातिलब्ध राष्ट्र भक्त एवं

ऋषि तुल्य महापुरूष पर रखा गया । वे बाल्यकाल से ही पशु प्रेमी थे एवं उनका यह दृढ़ विश्वास था कि उन्नत पशुधन द्वारा ही ग्रामीण विकास संभव है । उन्होने पशु उत्पादन वृद्धि हेतु अपने स्तर पर काफी प्रयत्न किये । कम उत्पादन की श्रेणी के गौवशं जैसे मैसूर की अमृतमहाल और क्रांक्रेज नस्लों की चर्चा वे अक्सर करते थे, एवं उनके उत्पादन बढ़ाने की चिंता उन्हें रहती थी । इनका यह मानना था कि ग्रामोदय की कल्पना उन्नत पशुधन से ही साकार हो सकती है और यह उन्होनें अथक परिश्रम के द्वारा सिद्ध कर दिखाया । मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र चित्रकूट को इस कार्य के लिये उन्होंने कर्मभूमि बनाया, देश के पहले ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना की, उसके कुलाधिपति के दायित्व का निर्वहन सफलतापूर्वक किया एवं दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से गॉवों के सर्वांगीण विकास की दिशा में आत्मनिर्भर गॉव की योजनायें चलाई । 268 गॉव उत्तरप्रदेश के एवं 244 मध्यप्रदेश के ऐसे कुल 512 ग्रामों को समग्र विकास के लिये गोद लिया जिसे चित्रकूट योजना के नाम से जाना जाता है । 26 जनवरी 2002 को यह योजना प्रारंभ की गई, पहले चरण में 80 ग्रामों में कार्य किये गये औ 15 अगस्त 2005 को ये गॉव आत्मनिर्भर घोषित हुये, दूसरे चरण में शेष सभी गॉव 27 फरवरी सन् 2011 को आत्मनिर्भर घोषित किये गये । यह नानाजी की पहली पुण्यतिथि पर संभव हुआ । मध्यप्रदेश शासन ने इस विश्वविद्यालय का नामकरण नानाजी देशमुख के नाम रखकर इस दिशा में कैसा विकास हमे भविष्य में चाहिये, समाज की हमसे क्या अपेक्षायें हैं, की ओर हम सब को संकेत दिया है । नानाजी के कार्य एवं आदर्श हमारे विश्वविद्यालय को निरंतर प्रेरित करते रहेंगे ।

विश्वविद्यालय में तीन पशुचिकित्सा महाविद्यालय जबलपुर, महू और रीवा और जबलपुर में एक वन्यजीव फोरेंसिक और स्वास्थ्य स्कूल एवं एक पशु जैव प्रौद्योगिकी केंद्र हैं । इसके साथ ही जबलपुर में एक मत्स्य पालन महाविद्यालय भी स्थित है । विश्वविद्यालय में जबलपुर, महू, रीवा, भोपाल और मुरैना में स्थित पांच पशुचिकित्सा डिप्लोमा कालेज भी हैं, जो वेटरनरी पॉलिटेक्निक में दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं । विश्वविद्यालय द्वारा ग्रामीण किसानों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति के उत्थान के लिए अनुसंधान गतिविधियों को मजबूत करने और प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के लिए वित्तीय संसाधन जुटाने के महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं । वर्तमान में विश्वविद्यालय में

कुल 42 बाह्य वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं संचालित हो रही हैं जिनका कुल बजट 95.86 करोड़ रू है । विश्वविद्यालय द्वारा किसानों के लिए न केवल अनुसंधान कार्य किये जा रहे है बल्कि किसानों के लिए विभिन्न उत्पाद और तकनीक भी उपलब्ध कराने के लिए भी विश्वविद्यालय प्रयासरत है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा पोषित अनुसूचित जनजातीय परियोजना के तहत, मण्डला जिले में पशुपालकों को अजीविका हेतु बकरी एवं कुक्कुट पालन के स्व–सहायता समूहों के माध्यम से व्यवसाय दिया जा रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा पोशित फार्मर फार्स्ट परियोजना के तहत अंगीकृत 6 गाँवों में पशु पालकों की समस्याओं का समाधान एवं ग्रामीण इलाकों के कम आय वाले परिवार हेतु पशुपालन व्यवसाय अपनाने हेतु प्रेरित किया जा रहा है।

मुझे खुशी है कि विश्वविद्यालय द्वारा जबलपुर के सालीवाड़ा ग्राम में ''स्वच्छता पखवाड़ा'' जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जो 100 घंटो का रहा । इस कार्यक्रम में ग्रामीणों किसानों एवं पशुपालकों को परिवेश की स्वच्छता, व्यक्तिगत स्वच्छता, खाद्यय स्वच्छता एवं जल स्वच्छता की जानकारी एवं षिक्षा दी गई तथा पशुपालन टीकाकरण, पशु–आहार एवं अन्य महत्वपूर्ण जानकारियों विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा दी गई । छात्रों ने स्वच्छता और इसका महत्व को दर्शाने वाले नाटक ''नुक्कड़ नाटक'' का भी प्रदर्शन किया । यह प्रसन्नता का विषय है कि विश्वविद्यालय द्वारा जबलपुर में टी. बी. मरीजों के उन्मूलन एवं रोकथाम हेतु अभियान चलाया गया जिसके अंतर्गत टी.बी. मरीजों को दवाईयां एवं पोष्टिक आहार प्रदान किए गये ।

शिक्षा आर्थिक विकास की आधारशिला है, वैज्ञानिक शोधों ने विश्व का चित्र बदल दिया है । औद्योगिक क्रांति व हरित क्रांति से उत्पादन कई गुना बढ़ा है तथा सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति ने विश्व के सभी लोगों को एक दूसरे के निकट ला दिया है । फलतः रोजगार बढ़े हैं तथा अनेक लोगों का जीवन स्तर भी सुधरा है । भारत में श्वेत क्रांति के फलस्वरूप दुग्ध उत्पादन में हमारा देश प्रथम स्थान पर पहुंच गया है । मछली पालन, मुर्गी पालन में भी विश्व के प्रथम पांच देशों में हमने स्थान बनाया है । इतनी उपलब्धियां प्राप्त होने पर भी निर्धनता अभी हमारी सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई है । भारत ने खाद्य उत्पादन में भी आशातीत वृद्धि की है, फिर भी लगभग 25 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे है, भुखमरी से न सही, कुपोषण से बच्चे एवं महिलायें विशेष रूप से अधिक पीड़ित

हैं । बीमारियों एवं औषधियों के खर्च के बौझ से वे उबर नहीं पा रहे है । क्या हम शिक्षित वर्ग के लिये यह चिंता का विषय नहीं हैं । पशुपालन, मुर्गीपालन, मछनीपालन आदि करने वाले अधिकांश लोग विशेषकर महिलाये अभी भी निरक्षर और विपन्न है, वे हमें जीवन रक्षा एवं स्वास्थ्य रहने के लिये आवश्यक पौष्टिक पदार्थ उपलब्ध कराते हैं मगर हम उन्हें क्या देते है । विचारणीय है ।

ज्ञान, संस्कार और परिश्रम के परिणाम स्वरूप , जिस उपाधि से आप आज अलंकृत हुए हैं वह सुख समृद्धि और सफलता की हर सीढ़ी पर आपके साथ परछाई की तरह चलेगी । अतः आपकी सोच और चिंतन सदैव मानव समाज के उत्थान की दिशा में होना चाहिये । पशुचिकित्सक के रूप में अपने ज्ञान एवं सूझबूझ से पशुपालकों तथा ग्रामीणजनों को स्वावलंबी बनाने में आपकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है । पशुपालन, मछलीपालन, बकरीपालन, सूकरपालन आदि के माध्यम से आर्थिक रूप से पिछड़े ग्रामीणजनों का जीवन स्तर आपके ज्ञान एवं सेवाभावना के माध्यम से सुधारा जा सकता है । अपने मध्यप्रदेश में लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण तथा वनांचलों में निवास करती है । प्राकृतिक संपदा एवं जैव विविधता से ओतप्रोत हमारा प्रदेश उन्नत पशुपालन व्यवसाय के विकास से ही भारत के अग्रणी प्रदेशों की अग्रिम पंक्ति में स्थान बना सकता है । मैं आशा करती हूं कि यह विश्वविद्यालय नानाजी के योगदान और उनके नाम की सार्थकता को ध्यान में रखते हुए पशु संवर्धन और पशु संरक्षण शोध कार्यों के माध्यम से गोवंश धन–धान्य उत्पादन का आधार स्तम्भ बनेगा तथा ग्रामीण क्षेत्रों के पिछड़े जनों में व्याप्त गरीबी घटाने में प्रासंगिक सिद्ध होगा । हमारे प्रदेश में सहकारी समितियों की योजनायें और भी ज्यादा विकसित होनी चाहिये, जिससे गुजरात, पंजाब, हरियाणा एवं राजस्थान की भांति पशुधन उत्पादों का व्यवसायीकरण हो ताकि उत्पादकों को अधिक लाभ प्राप्त हो और वे इस व्यवसाय को और आगे बढ़ाने में उत्साहित हो सकें । मुझे यह बताने में खुशी हो रही है कि गुजरात राज्य में पशुपालन के क्षेत्र में आधुनिकतम तकनीक अपनाकर काफी उन्नती की है । गुजरात का अमूल आज भारत वर्ष में दुग्घ एवं दुग्घ उत्पादन से संबंधित व्यवसाय में काफी ख्याति प्राप्त की है । मैं आशा करती हूँ कि मध्य प्रदेश एवं यह विश्वविद्यालय अमूल मॉडल अपनाकर अपनी आमदनी में वृद्धि कर आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसित होगा ।

प्राकृतिक संपदा का संवर्धन आज की महती आवश्यकता है, इसके लिये प्राकृतिक संसाधनों के साथ साथ वन्यजीवों का संरक्षण भी आवश्यक है । मुझे यह जानकर प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि वन्यजीव स्वास्थ्य प्रबंधन की दिशा में यह विश्वविद्यालय अपनी सेवायें, प्रदेश तथा देश के अन्य प्रदेशों को प्रदान कर रहा है । मेरी जानकारी में यह लाया गया है कि देश का यह एकमात्र केन्द्र है, जो वन्यजीव फॉरेन्सिक एवं स्वास्थ्य का कार्य देखता है जिसके चलते, राज्य में वन्यप्राणियों के आखेट पर अंकुश लगाने का मार्ग प्रशस्त हुआ है । इस संस्थान को मध्य प्रदेश शासन द्वारा वन्य प्राणियों के फारेन्सिक नमूनों की जॉच कर रिपोर्ट प्रदान करने हेतू अधिकृत किया गया है, जो कि न्यायालय में भी प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किये जाते हैं । अभी तक केन्द्र द्वारा 1500 से भी अधिक फारेन्सिक जॉच की रिपोर्ट की जा चुकि है, जिसके आधार पर अनेकों अवैध शिकारियों को दंडित किया जा गया है । मैं आशा करती हूॅ कि यह केन्द्र अपनी कार्य क्षमता से राष्टीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफल होगा ।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि विश्वविद्यालय को प्रथम पेटेन्ट भारत सरकार की बौद्धिक संपदा विभाग द्वारा प्रदान किया गया है जिसके अंन्तर्गत क्लोनिंग प्रक्रिया के सरलीकरण हेतु माईक्रोटूल एवं माईक्रो फ्यूजन सिस्टिम विकसित किया गया है जिससे क्लोनिंग प्रक्रिया शीघ्र, आसान तरीके से कम लागत द्वारा की जा सकती है । इसके अलावा एक और पेटेन्ट स्वीकृति के अंतिम चरण में है जिसके अन्तर्गत वन्य एवं पालतू सूकर की पहचान माईटोजिनोम सीक्वेंसिंग के द्वारा की जा सकती है।

विश्वविद्यालय द्वारा गौवंश के गोमय एवं गोमूत्र का उपयोग कर पर्यावरण स्वच्छता में भी योगदान दिया जा रहा है । देसी गाय के गोमूत्र से पंचगव्य तत्वों के उपयोग से मच्छर–मार अगरबत्ती, हवन टिकिया, गोबर लकड़ी एवं औषधियों का उत्पादन किया जा रहा है । इसके द्वारा केन्द्र में उत्पादित गोबर गमला काफी प्रचलित हो रहा है, जो कि नर्सरी में उपयोग होने वाली पोलिथिन को प्रतिस्थापित कर पर्यावरण को संरक्षित करने में उपयोगी होंगे । इसी तारतम्य में विश्वविद्यालय द्वारा पंचगव्य अनुसंधान एवं उत्पाद केंद्र की स्थापना कर प्रदेष के गौवंष के संवर्धन एवं गौषालों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु प्रयास किए जा रहे हैं । इस संबंध में विश्वविद्यालय द्वारा पंचगव्य केंद्र की स्थापना हेतु केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजा गया है ।

इस विश्वविद्यालय के पशु वैज्ञानिकों द्वारा ऐसी देशी मुर्गी की प्रजाति विकसित की है जिसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा व्यवसायिक मान्यता प्रदान की है । जिसमें रोगों की प्रतिरोधी क्षमता अधिक है तथा सामान्य देशी मुर्गियों की तुलना में अण्डा उत्पादन भी अधिक है । इस विभाग द्वारा कड़कनाथ एवं जबलपुर कलर प्रजाति के बैक क्रासिंग से एक नई कुक्कुट प्रजाति **''नर्मदा निधि''** विकसित की गई है । यह कुक्कुट प्रजाति 162 दिन में परिपक्व होकर 220 अंडे तक प्रतिवर्ष देती है एवँ यह प्रजाति किसानों में लोकप्रिय है तथा उनकी जीवनशैली के बदलाव में बहुत प्रभावषाली सिद्ध होगी। इस प्रजाति को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली (आई.सी.ए.आर.) द्वारा रजिस्टर्ड कर मान्यता प्रदान की गई है। अतः ऐसी प्रजातियों के मुर्गी के चूजों को अधिक से अधिक संख्या ग्रामीणजन को वितरित कर विकास यात्रा का निरंतर बढ़ावा देना आवश्यक प्रतीत होता है जिससे गरीब कुक्कुट पालकों को स्वावलंबी बनाया जा सकता है । विश्वविद्यालय द्वारा मत्स्य पालन में उपाधि कार्यक्रम का आरंभ एक शुभ संदेश है पिछड़े वर्ग के आर्थिक स्तर को बढाने में यह पहल कारगर सिद्ध होगी, ऐसा मैं मानती हूँ।

मध्यप्रदेश भारत का ऐसा प्रदेश है जहां देशी गौवंश की संख्या सर्वाधिक है तथा भैंसों की संख्या भी प्रर्याप्त रूप से वृद्धि की ओर अग्रसर है । दुधारू पशुओं की देशी नस्लों का पालन क्षेत्रीय जलवायु तथा पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल है । अतः इनका संवर्धन करने के लिये अत्याधिक प्रयत्नों की आवश्यकता है । भारतीय नस्ल की देषी गायों के दूध में ए2 बीटा–केसिन की मात्रा अधिक होती है जो कि स्वास्थ्यवर्धक एवं प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ता है । भारत में मध्यप्रदेश दुग्ध उत्पादन में तीसरे स्थान पर है हमें प्रथम स्थान प्राप्त करना है, यह संकल्प आपका होना चाहिये । हमारा प्रदेश भारत के अन्य प्रदेशों पर पशु उपलब्धता हेतु निर्भर न रहे, स्वतः स्वावलंबी हो, ऐसा करने के लिये व्याप्त कमियों को दूर करने के लिये आपका प्रयास होना चाहिये । अपने प्रदेश में पशुधन विकास नीति के क्रियान्वयन में आप एक ठोस कड़ी हैं, यही आपको सिद्ध करना है ।

आज उपाधियॉ प्राप्त कर युवा अपने दायित्व और कर्तव्य परायणता से सराबोर नया जीवन प्रारंभ करने जा रहे हैं । आने अध्ययनकाल में आपने जो ज्ञान प्राप्त किया है तथा जो कुछ अपने आचार्यगणों से सीखा है, उससे विषेश रूप से न्यूनतम आय वाले पशुपालकों, ग्रामवासियों, वनवासियों को स्वावलंबी बनाने, गांधी जी एवं नानाजी की उत्कृष्ट

अभिलाशा की पूर्ति तथा उनके द्वारा स्थापित आदर्शों को मूर्तरूप प्रदान करने का सही समय आ गया है । इस अवसर पर मैं उन सभी युवा–विद्या उपासकों को साधुवाद देती हूॅ जिन्होने पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान विषय में स्नातक/स्नातकोत्तर अथवा विद्यावाचस्पति की परीक्षा में सफलता प्राप्त की है । जिन उपाधिधारियों ने विशेष परिश्रम और तन्मयता के आधार पर निर्धारित विषयों में सर्वाधिक अंक अर्जित कर स्वर्ण पदक प्राप्त किये है, मैं उनके जीवन के इस अविस्मरणीय अवसर पर हार्दिक बधाई देती हूॅ और उनके उज्जवलतम् भविष्य की ईश्वर से कामना करती हूॅ । मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी वे अपने विश्वविद्यालय की सुकीर्ति के ध्वज वाहक बने रहेंगे ।

आप सभी को आपके प्रदीप्तमान भविष्य की कामना करते हुये मेरा शुभाशीष एवं आयोजकों को बधाई ।

जय हिन्द ..... वन्देमातरम् .....